International Journal of Physical and Social Science
Vol. 8 Issue 8, August 2018,
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गुप्त काल में नारी शिक्षा

डा0 श्यामदेव पासवान
समाजशास्त्र विभाग,
संजय गाँधी महिला कॉलेज गया

गौरवशाली एवंउन्नतप्राचीनभारतीय संस्कृति से अनभिज्ञआजकावर्तमानसमाजऔरव्यक्ति, अपनीमहानसंस्कृतिकोभुलाआधुनिकहोनेकादंभभरताहै।प्राचीन शब्दसुनतेहीमस्तिष्कमें रूढ़िवादिता, आडम्बर, निरक्षरतासामाजिक बंधनो की जकड़न व घुटनकाअहसासहोनेलगताहै।परन्तु यदिप्राचीनसंस्कृति के उपलब्ध साक्ष्य परदृष्टिपातकरतेहैंतोभारतीय साहित्य मेंनारी की उन्नतस्थिति, उनकीविद्वता, उच्चशिक्षा व श्रेष्ठकार्योंकाविषद् वर्णनमिलताहै।

प्राचीनभारतमेंनारी व पुरूष मेंकोईभेद–भावनहींथा।उनकीस्थितिर्प्याप्तउन्नतथी, पुरूषों के समाजनारीविद्याध्ययन, हवन–पूजनकरतीतथासाहित्य सेवा व समाज के उत्थानमें योगदानदेतीथी।प्राचीनभारतीय साहित्य (वेद, पुराण, महाकाव्य, ब्राह्मण, बौद्व, जैनसाहित्य आदि) मेंसैकड़ोनारियों के नामोंकाउल्लेख हैजोवेद, दर्शन, तर्क, मीमांस, वार्ता, साहित्य, ललितकलाओं (नृत्य, संगीत, चित्रकला) तथाव्यावहारिकशिक्षाआदिविषयों की प्रकांडविद्वानथीं।

वैदिक युगमेंनारीकोशिक्षाकासमानअधिकारप्राप्तथा।प्राचीनकालमेंविद्या–अध्ययन से पूर्वउपनयनसंस्कारअनिवार्यथा।अतः बालको के समानबालिकाओंकाभीउपनयनसंस्कारहोताथा। ये विभिन्नविषयों की शिक्षाग्रहणकरतीथी।वेसिर्फवेदों की ऋचाओंकागानहीनहींकरतीअपितुस्त्रियों ने ऋगवेद के कई ऋचाओं की रचनाभीकी। ऐसीकवियत्रियोंमेंरोमशा, अपाला, सिकता, विश्वपारा, उर्वशी, घोषा, लोपामुद्राआदिविदषीनारियाँ उल्लेखनीय है।पांडव की माँ कुंतीअथर्ववेद की ज्ञाताथी।

विद्याध्ययन के अतिरिक्तस्त्रियाँ समान रूप से यज्ञादिकार्योंकोकरतीथीं।राम के अभिषेक के समय कौशल्या एवंबालि–सुग्रीव युद्व समय के तारा यज्ञ कररहींथी।

सं क्षोभवासना दृश्टानित्य व्रतपरायणा।
अग्निंजुहेति स्म तदामन्त्र –विस्कृतमंगला।।

रामायण
2/20/15

यहाँ तककिपत्नी की अनुपस्थितिमें यज्ञादि धार्मिककार्यपूर्णनहीं समझे जातेथे।रामेश्वर की प्रतिष्ठाराम ने पत्नीसीता के साथ की थीतथासीता की अनुपरस्थितिमेंस्वर्णप्रतिमा के साथअश्वमेघ यज्ञ सम्पन्नकियाथा।

वैदिककालतथामौर्य–पूर्वकालतकशिक्षितस्त्रियों के दोवर्गथे।सामान्य शिक्षितस्त्रियाँ ''सधोवूध'' तथाज्ञानपिपासुउच्चशिक्षितस्त्रियाँ ''ब्रह्म–वादिनी'' कहलातीथीं। ऋषिकुशाध्वज की कन्यावेदवतीउच्चशिक्षिताब्रह्मवादिनीकन्याथी।

कु ाध्वजोनामपिताब्रह्र्शि मत्प्रभः।
वृहस्पतिसुतःश्रीमान् बुद्वया तुल्योवृहस्पतेः।

रामायण 1/17

नारीशिक्षा के भीदो रूपथे–आध्यात्मिक एवंव्यावहारिक।पुराणों (वायु पुराण, ब्रह्मांडपुराण, विष्णुपुराण, मत्स्य पुराण) के अनुसारअपर्णा, भुवना[1], एकपर्णा एकनाटला[2], मेना, धारिणी[3], संनति[4], शतरूपा[5], आदिआध्यात्मिकज्ञानमेंनिपुणब्रह्मवादिनीस्त्रियाँ थीं।उमा, पीवरी, धर्मव्रताआदि ने तप के द्वारामनोनुकूलवर पाया[6]

''एतेशांपीवीकन्यामानतीदिविविश्रुता।
योगिनी योगमाता च तप चक्रेसुदारूणाम।

मत्स्य पुराण
15/5–6

कन्याओंकोइनशिक्षाओं के अतिरिक्तगृहकार्य, पशुओं की देखभालतथाललितकलाओं–नृत्य, संगीत, चित्रकलाआदि की व्यावहारिकशिक्षाभीदीजातीथी।अपालाकृषिकार्यमें दक्ष थी।वेसस्त्र सिलना, बुनना, सुतकातना, गादुहनाभीजानतीथीवेदों की ऋचाओंकागानकरकुशलतापुर्वकनृत्य करतीथी।चित्रलेखा एक अत्यंतकुशलचित्रकारथीजिसनेअनेकोंदेव, गांधर्व व मनुष्योंकोचित्रांकितकिया था।[7]

शुद्रकन्याओं के अध्ययन की कोईव्यवस्थानहींथीऔर उनके अध्ययनकरने के प्रमाणगुप्तकालमेंनहींमिलते।साधारणतः प्राचीनकाल से उनके उपनयन, अध्ययन

आदिवर्णितथे।ब्राह्मणकन्याओंकोतोपिताऔरपतिदोनो के घरोंमें अध्ययन के अवसरहोतेथेऔररातश्रितातथाअभिजातकुलिनाओं के लिए महलोंमेंही अध्ययन की व्यवस्थाहोजायाकरतीथी।

वात्सयायन[8]काकहनाहैकिनारियोंको 64 अंग विधाओंका अध्ययन करनाचाहिए।गुप्तकालीन ''अमरकोष'', नारीउपाध्याय, उपाध्यायीऔरवैदिकमंत्रों की शिक्षिका– ''आचार्य'' उल्लेख करताहै।कालांतरमें शुद्रों की भाँतिस्त्रियोंकोभीवेदों के पठन–पाठन से वंचितकरदियागया।

''पुराकल्पेकुमारीणांमोजीवंधमिश्यते।''
अध्यापन च वेदानांसावित्रि वाचनंतथा।।

संस्कारप्रका ं, यम उद्वरण पृ0 402–3

इसप्रकारप्राचीनभारतीय नारी कलम औरतलवारदोनों की धनीथी। समय के साथसमाजमें बढ़तीगईदोष–युक्त–प्रथाओं व अन्य परिस्थितियों के वशीभूतनारीशिक्षा व उसकेअधिकारोंकानिरंतरह्रासहोतागया।

पादटिप्पणियां–

1. वायुपुराण, 66.27
   ब्रह्मंडपुराण 3.2.28
2. वायुपुराण 72.13–15
   ब्रह्मंडपुराण 3.10. 15–16
3. विष्णुपुराण 3.10–19
   वायुपुराण 30–28–29
   ब्रह्माण्डपुराण 2.13.30
4. मत्स्य पुराण 20.27
5. मत्स्य पुराण 4.24
6. मत्स्य पुराण 154, 290, 294–301, 308–309
   वायुपुराण 41, 31
   मत्स्य पुराण, 15.5.–6
7. विष्णुपुराण 5.32.22

8. कामसूत्र–2,3, 13, 16, 4, 1, 32
9. कामसूत्रः 2, 6, 14